الجزء ١١

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَيْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ
اِلَيْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ
نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ
اَخْبَارِكُمْ ؕ وَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ
وَ رَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٤﴾

94. (ऐ मुसलमानो!) वोह तुमसे उ़ज़्र ख़्वाही करेंगे जब तुम उनकी तरफ़ (इस सफ़रे तबूक से) पलट कर जाओगे, (ऐ ह़बीब !) आप फ़रमा दीजिए : बहाने मत बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात पर यक़ीन नहीं करेंगे, हमें अल्लाहने तुम्हारे ह़ालातसे बा ख़बर कर दिया है, और अब (आइन्दह) तुम्हारा अ़मल (दुनिया में भी) अल्लाह देखेगा और उसका रसूल (ﷺ) भी (देखेगा) फिर तुम (आख़िरत में भी) हर पोशीदह और ज़ाहिर को जाननेवाले (रब) की तरफ़ लौटाए जाओगे तो वोह तुम्हें उन तमाम आ'माल से ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम किया करते थे।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ
اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا
عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَّ مَاْوٰىهُمْ
جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٥﴾

95. अब वोह तुम्हारे लिए अल्लाहकी क़स्में खाएंगे जब तुम उनकी तरफ़ पलट कर जाओगे ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो, पस तुम उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात ही न करो बेशक वोह पलीद हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है येह उसका बदला है जो वोह कमाया करते थे।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ
تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى
عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٩٦﴾

96. येह तुम्हारे लिए क़स्में खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, सो (ऐ मुसलमानो!) अगर तुम उन से राज़ी भी हो जाओ तो (भी) अल्लाह ना फ़रमान क़ौम से राज़ी नहीं होगा।

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا وَّ
اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَاۤ
اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٩٧﴾

97. (येह) देहाती लोग सख़्त काफ़िर और सख़्त मुनाफ़िक़ हैं और (अपने कुफ़्रो निफ़ाक़की शिद्दत के बाइ़स) इसी क़ाबिल हैं कि वोह इन हुदूदो अह़्काम से जाहिल रहें जो अल्लाहने अपने रसूल (ﷺ) पर नाज़िल फ़रमाए हैं, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला, बड़ी ह़िक्मतवाला है।

وَ مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا

98. और उन देहाती गँवारों में से वोह शख़्स (भी) है जो

يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّ يَتَرَبَّصُ بِكُمُ
الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٩٨﴾

उस (माल) को तावान क़रार देता है जिसे वोह (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करता है और तुम पर ज़माने की गरदिशों (या'नी मसाइबो आलाम) का इन्तिज़ार करता रेहता है, (बला-व-मुसीबत की) बुरी गर्दिश उन्हीं पर है, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

وَ مِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ
قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ
اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ
اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿٩٩﴾ ع ١٠ ١٢

99. और बादिया नशीनों में (ही) वोह शख़्स (भी) है जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है और जो कुछ (राहे ख़ुदामें) ख़र्च करता है उसे अल्लाहके हूज़ुर तक़र्रुब और रसूल (ﷺ) की (रह़मत भरी) दुआ़एं लेने का ज़रीआ़ समझता है, सुन लो, बेशक वोह उनके लिए बाइ़से क़ुर्बे इलाही है, जल्द ही अल्लाह उन्हें अपनी रह़मतमें दाख़िल फ़रमा देगा । बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ
الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ
عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ﴿١٠٠﴾

100. मुहाजिरीन और उनके मददगार (अन्सार) में से सब्क़त ले जानेवाले, सब से पहले ईमान लानेवाले और दर्जए एह़सान के साथ उनकी पैरवी करने वाले, अल्लाह उन (सब) से राज़ी हो गया और वोह (सब) उससे राज़ी हो गए और उसने उनके लिए जन्नतें तैयार फ़रमा रखी हैं जिन के नीचे नेहरें बेह रही हैं, वोह उन में हमेशा हमेशा रेहनेवाले हैं, येही ज़बरदस्त कामयाबी है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ
مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ وَ مِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ۛؔ
مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۟ لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ
نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ

101. और (मुसलमानो!) तुम्हारे गिर्दो नवाह़ के देहाती गँवारों में बा'ज़ मुनाफ़िक़ हैं और बा'ज़ बाशिन्दगाने मदीना भी, येह लोग निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, आप उन्हें (अब तक) नहीं जानते हम उन्हें जानते हैं। (बाद में हुज़ूर ﷺ को भी जुमला मुनाफ़िक़ीन का इ़ल्म और मा'रेफ़त अ़ता कर दी गई) अ़नक़रीब हम उन्हें दो मर्तबा (दुनिया

مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠١﴾

ही में) अ़ज़ाब देंगे ★फिर वोह (क़ियामत में) बड़े अ़ज़ाब की तरफ़ पलटाए जाएंगे।

وَ اٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّ اٰخَرَ سَيِّئًا ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠٢﴾

102. और दूसरे वोह लोग कि (जिन्होंने) अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ कर लिया है उन्होंने कुछ नेक अ़मल और दूसरे बुरे कामों को (ग़लती से) मिला जुला दिया है, क़रीब है कि अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले, बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَ تُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾

103. आप उनके अम्वाल में से सदक़ा (ज़कात) वसूल कीजिए कि आप इस (सदक़े) के बाइ़स उन्हें(गुनाहोंसे) पाक फ़रमा दें और उन्हें (ईमानो माल की पाकीज़गी से) बरकत बख़्श दें और उनके हक़में दुआ़ फ़रमाएं, बेशक आपकी दुआ़ उनके लिए(बाइ़से) तस्कीन है, और अल्लाह ख़ूब सुननेवाला ख़ूब जाननेवाला है।

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ يَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾

104. क्या वोह नहीं जानते कि बेशक अल्लाह ही तो अपने बंदोंसे (उनकी) तौबा क़बूल फ़रमाता है और सदक़ात (या'नी ज़कातो ख़ैरात अपने दस्ते क़ुदरत से) वुसूल फ़रमाता है और येह कि अल्लाह ही बड़ा तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला निहायत महरबान है।

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ وَسَتُرَدُّوْنَ

105. और फ़रमा दीजिए : तुम अ़मल करो, सो अ़नक़रीब तुम्हारे अ़मल को अल्लाह (भी) देख लेगा और उसका रसूल (ﷺ भी) और अहले ईमान (भी) और

★ एक बार जब उनकी पेहचान करा दी गई और हुज़ूर ﷺ ने खुत्बए जुमुआ़ के दौरान इन मुनाफ़िक़ीन को नाम ले ले कर मस्जिदसे निकाल दिया, येह पहला अ़ज़ाब बसूरते ज़िल्लतो रुस्वाई था और दूसरा अ़ज़ाब, बसूरते हलाकतो मुक़ातिला हुआ जिसका हुक्म बादमें आया।

तुम अ़नक़रीब हर पोशीदह और ज़ाहिर को जाननेवाले (रब) की तरफ़ लौटाए जाओगे, सो वोह तुम्हें उन आ'मालसे ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम करते रेहते थे।

106. और कुछ दूसरे (भी) हैं जो अल्लाह के (आइन्दह) हुक्म के लिए मुअख़्ख़र रखे गए हैं वोह या तो उन्हें अ़ज़ाब देगा या उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेगा, और अल्लाह ख़ूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

107. और (मुनाफ़िक़ीन में से वोह भी हैं) जिन्होंने एक मस्जिद तैयार की है (मुसलमानों को) नुक़्सान पहुंचाने और कुफ़्र (को तक़्विय्यत देने) और अहले ईमान के दरमियान तफ़्रिक़ा पैदा करने और उस शख़्स की घातकी जगह बनाने की ग़रज़ से जो अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से पहले ही से जंग कर रहा है, और वोह ज़रूर क़स्में खाएंगे कि हमने (इस मस्जिद के बनाने से) सिवाए भलाई के और कोई इरादा नहीं किया, और अल्लाह गवाही देता है कि वोह यक़ीनन झूटे हैं।

108. (ऐ ह़बीब!) आप उस (मस्जिदके नाम पर बनाई गई इ़मारत) में कभी भी खड़े न हों । अल्बत्ता वोह मस्जिद, जिसकी बुनियाद पहले ही दिन से तक़्वा पर रखी गई है, ह़क़दार है कि आप उसमें क़ियाम फ़रमा हों। उसमें ऐसे लोग हैं जो (ज़ाहिरन-व-बातिनन) पाक रहने को पसंद करते हैं, और अल्लाह तहारत शिआ़र लोगोंसे मुह़ब्बत फ़रमाता है।

109. भला वोह शख़्स जिसने अपनी इ़मारत (या'नी मस्जिद) की बुनियाद अल्लाह से डरने और (उसकी) रज़ाओ ख़ुशनूदी पर रखी, बेहतर है या वोह शख़्स जिसने अपनी इ़मारत की बुनियाद ऐसे गढ़े के किनारे पर रखी जो गिरनेवाला है। सो वोह (इ़मारत) उस मे'मार के साथ

إِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٥﴾

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا
يُعَذِّبُهُمْ وَ اِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ؕ
وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠٦﴾

وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا
ضِرَارًا وَّ كُفْرًا وَّ تَفْرِيْقًا بَيْنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ
اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَ اللّٰهُ
يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٠٧﴾

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ
اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ
يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ
رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ
وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى
مِنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٍ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ
اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ

هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۹﴾

ही आतिशे दोज़ख़ में गिर पड़ी, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं फ़रमाता।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً
فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلَّآ اَنْ تَقَطَّعَ
قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۱۰﴾ ع ۱۳

110. उनकी इमारत जिसे उन्होंने (मस्जिद के नाम पर) बना रखा है हमेशा उनके दिलोंमें (शक और निफ़ाक़ के बाइस) खटकती रहेगी सिवाए इसके कि उनके दिल (मुसल्सल ख़राश की वजह से) पारह पारह हो जाएं, और अल्लाह खूब जाननेवाला बड़ी हिक्मतवाला है।

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ
الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَيْهِ
حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ وَ
الْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ
فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ
بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۱۱﴾

111. बेशक अल्लाहने अह्ले ईमानसे उनकी जानें और उनके माल, उनके लिए जन्नतके इवज़ ख़रीद लिए हैं, (अब) वोह अल्लाह की राह में क़िताल करते हैं, सो वोह (हक़ की ख़ातिर) क़त्ल करते हैं और (ख़ुद भी) क़त्ल किए जाते हैं। (अल्लाहने) अपने ज़िम्मए करम पर पुख़्ता वा'दा (लिया) है, तौरात में (भी) इन्जीलमें (भी) और क़ुरआन में (भी), और कौन अपने वा'दे को अल्लाह से ज़ियादह पूरा करनेवाला है, सो (ईमानवालो!) तुम अपने सौदे पर ख़ुशियां मनाओ जिसके इवज़ तुमने (जानोमाल को) बेचा है और येही तो ज़बरदस्त कामयाबी है।

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ
السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ
الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ النَّاهُوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَ الْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ
اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

112. (येह मोमिनीन जिन्होंने अल्लाह से उख़रवी सौदा कर लिया है) तौबा करनेवाले, इबादत गुज़ार,(अल्लाह की) हम्दो सना करनेवाले, दुन्यवी लिज़्ज़तों से कनारा कश रोज़हदार, (ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ् से) रुकूअ् करनेवाले, (क़ुर्बे इलाही की ख़ातिर) सुजूद करनेवाले, नेकीका हुक्म करनेवाले और बुराई से रोकनेवाले और अल्लाहकी (मुक़र्रर कर्दह) हुदूद की हिफ़ाज़त करनेवाले हैं, और उन अह्ले ईमानको ख़ुश ख़बरी सुना दीजिए।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ

113. नबी (ﷺ) और ईमानवालों की शानके लाइक़

يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَ لَوْ كَانُوْٓا
اُولِيْ قُرْبٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ
اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۱۳﴾

नहीं कि मुशरिकों के लिए दुआए मग़फ़िरत करें अगरचे वोह क़राबत दार ही हों इसके बाद कि उनके लिए वाज़ेह हो चुका कि वोह (मुशरिकीन) अह्ले जहन्नम हैं।

وَ مَا كَانَ اسْتِغْفَارُ اِبْرٰهِيْمَ
لِاَبِيْهِ اِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ
اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ اَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ
تَبَرَّاَ مِنْهُ ؕ اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَاَوَّاهٌ
حَلِيْمٌ ﴿۱۱۴﴾

114. और इब्राहीम (عليه السلام) का अपने बाप (या'नी चचा आज़र, जिसने आपको पाला था) के लिए दुआए मग़फ़िरत करना सिर्फ़ उस वा'दे की ग़रज़ से था जो वोह उससे कर चुके थे, फिर जब उन पर येह ज़ाहिर हो गया कि वोह अल्लाह का दुश्मन है तो वोह उससे बेज़ार हो गए (उससे ला तअ़ल्लुक़ हो गए और फिर कभी उसके हक़ में दुआ न की) । बेशक इब्राहीम (عليه السلام) बड़े दर्दमंद (गिर्यओ ज़ारी करनेवाले और) निहायत बुर्दबार थे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِلَّ قَوْمًاۢ بَعْدَ اِذْ
هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۱۵﴾

115. और अल्लाह की शान नहीं कि वोह किसी क़ौम को गुमराह कर दे इसके बाद कि उसने उन्हें हिदायत से नवाज़ दिया हो, यहां तक कि वोह उनके लिए वोह चीज़ें वाज़ेह फ़रमा दे जिनसे उन्हें परहेज़ करना चाहिए, बेशक अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जाननेवाला है।

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ وَمَا لَكُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا
نَصِيْرٍ ﴿۱۱۶﴾

116. बेशक अल्लाह ही के लिए आस्मानों और ज़मीनकी सारी बादशाही है। (वोही) जिलाता और मारता है और तुम्हारे लिए अल्लाहके सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार (जो अम्रे इलाही के ख़िलाफ़ तुम्हारी हिमायत कर सके)।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَ
الْمُهٰجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ
مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ

117. यक़ीनन अल्लाहने नबी (ए-मुअ़ज़्ज़म ﷺ)पर रह़मतसे तवज्जोह फ़रमाई और उन मुहाजिरीन और अन्सार पर (भी) जिन्होंने (ग़ज़वए तबूक की) मुश्किल घड़ी में (भी) आप (ﷺ) की पैरवी की उस(सूरते ह़ाल) के बाद कि क़रीब था कि उनमें से एक गिरोह के

ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۷﴾

दिल फिर जाते, फिर वोह उन पर लुत्फ़ो रह़्मत से मुतवज्जह हुआ, बेशक वोह उन पर निहायत शफ़ीक़, निहायत महरबान है।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ؕ حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ ع ۱۴ ۸ ۳

118. और उन तीन शख़्सों पर (भी नज़रे रह़्मत फ़रमा दी) जिन (के फ़ैसले) को मुअख़्ख़र किया गया था यहां तक कि जब ज़मीन बावजूद कुशादगी के उन पर तंग हो गई और (खुद) उनकी जानें (भी) उन पर दूभर हो गईं और उन्हें यक़ीन हो गया कि अल्लाह (के अ़ज़ाब) से पनाहका कोई ठिकाना नहीं बजुज़ उसकी तरफ़ (रुजूअ़ के), तब अल्लाह उन पर लुत्फ़ो करम से माइल हुआ ताकि वोह (भी) तौबाओ रुजूअ़ पर क़ाइम रहें, बेशक अल्लाह ही बड़ा तौबा क़ुबूल फ़रमाने वाला निहायत महरबान है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾

119. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और अह्ले सिद्क़ (की मइ़य्यत) में शामिल रहो।

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًاۤ اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾

120. अह्ले मदीना और उनके गिर्दो नवाह़ के (रेहने वाले) देहाती लोगों के लिए मुनासिब न था कि वोह रसूलुल्लाह (ﷺ) से (अलग हो कर) पीछे रेह जाएं और न येह कि उनकी जाने (मुबारक) से ज़ियादह अपनी जानों से रग़बत रखें, येह (हुक्म) इस लिए है कि उन्हें अल्लाह की राह में जो प्यास (भी) लगती है ओर जो मशक़्क़त (भी) पहुंचती है और जो भूक (भी) लगती है और जो किसी ऐसी जगह पर चलते हैं जहां का चलना काफ़िरों को ग़ज़बनाक करता है और दुश्मनसे जो कुछ भी पाते हैं (ख़्वाह क़त्ल और ज़ख़्म हो या माले ग़नीमत वग़ैरह) मगर येह कि हर एक बातके बदलेमें उनके लिए एक नेक अ़मल लिखा जाता है। बेशक अल्लाह नेकूकारों का अज्र ज़ाए' नहीं फ़रमाता।

وَ لَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّ لَا كَبِيْرَةً وَّ لَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾

121. और न येह कि वोह (मुजाहिदीन) थोड़ा ख़र्चा करते हैं और न बड़ा और न (ही) किसी मैदान को (राहे ख़ुदा में) तय करते हैं मगर उनके लिए (येह सब सफ़ों सफ़र) लिख दिया जाता है ताकि अल्लाह उन्हें (हर उस अ़मल की) बेहतर जज़ा दे जो वोह किया करते थे।

وَ مَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْ لَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ ع ۱۵/۴

122.. और येह तो हो नहीं सक्ता कि सारे के सारे मुसलमान (एक साथ) निकल खड़े हों तो उनमेंसे हर एक गिरोह (या क़बीले) की एक जमाअ़त क्यों न निक्ले कि वोह लोग दीनमें तफ़क्कुह (या'नी ख़ूब फ़हमो बसीरत) हासिल करें और वोह अपनी क़ौमको डराएं जब वोह उनकी तरफ़ पलट कर आएं ताकि वोह (गुनाहों और नाफ़रमानी की ज़िन्दगी से) बचें।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. ऐ ईमानवालो ! तुम काफ़िरों में से ऐसे लोगों से जंग करो जो तुम्हारे क़रीब हैं (या'नी जो तुम्हें और तुम्हारे दीनको बराहे रास्त नुक़्सान पहुंचा रहे हैं) और (जिहाद ऐसा और उस वक़्त हो कि) वोह तुम्हारे अंदर (ताक़तो शुजाअ़त की) सख़्ती पाएं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है।

وَ اِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾

124. और जब भी कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो उन (मुनाफ़िक़ों) में से बा'ज़ (शरारतन) येह केहते हैं कि तुम में से कौन है जिसे इस (सूरत) ने ईमानमें ज़ियादती बख़्शी है, पस जो लोग ईमान ले आए हैं सो उस(सूरत)ने उनके ईमान को ज़ियादह कर दिया और वोह (उस कैफ़िय्यते ईमानी पर) ख़ुशियां मनाते हैं।

وَ اَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

125. और जिन लोगों के दिलों में बीमारी है तो उस

فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَ مَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۲۵﴾

(सूरत) ने उनकी ख़बासत (कुफ़्रो निफ़ाक़) पर मज़ीद पलीदी (और ख़बासत) बढ़ा दी और वोह इस ह़ालत में मरे कि काफ़िर ही थे।

اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾

126. क्या वोह नहीं देखते कि वोह हर साल में एक या दो बार मुसीबतमें मुब्तिला किए जाते हैं फिर (भी) वोह तौबा नहीं करते और न ही वोह नसीह़त पकड़ते हैं।

وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

127. और जब भी कोई सूरत नाज़िल की जाती है तो वोह एक दूसरे की तरफ़ देखते हैं, (और इशारों से पूछते हैं) कि क्या तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा फिर वोह पलट जाते हैं। अल्लाहने उनके दिलों को पलट दिया है क्यों कि येह वोह लोग हैं जो समझ नहीं रखते।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾

128. बेशक तुम्हारे पास तुम में से (एक बा अज़मत) रसूल (ﷺ) तशरीफ़ लाए। तुम्हारा तक्लीफ़ो मशक़्क़त में पड़ना उन पर सख़्त गरां (गुज़रता) है। (ऐ लोगो !) वोह तुम्हारे लिए (भलाई और हिदायत के) बड़े तालिबो आरज़ूमंद रेहते हैं (और) मोमिनों के लिए निहायत (ही) शफ़ीक़ बेहद रह़म फ़रमानेवाले हैं।

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖؗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾ ع ۱۶ ۷ ۵

129. अगर(इन बे पनाह करम नवाज़ियों के बावजूद) फिर (भी) वोह रूगर्दानी करें तो फ़रमा दीजिए : मुझे अल्लाह काफ़ी है उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं उसी पर भरोसा कि ए हुए हूं और वोह अर्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

आयातुहा 109 | 10 सूरतु यूनुस मक्किय्यतुन 5 | रुकूआतुहा 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरू जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿۱﴾

1. अलिफ़ लाम रा (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह ह़िक्मतवाली किताब की आयतें हैं।

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوٓا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكَٰفِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ مُّبِينٌ ﴿٢﴾

2. क्या येह बात लोगों के लिए तअ़ज्जुब खे़ज़ है कि हमने उनही में से एक मर्दे (कामिल) की तरफ़ वह़ी भेजी कि आप (भूले भटके हुए) लोगों को (अ़ज़ाबे इलाही का) डर सुनाएं और ईमानवालों को ख़ुशख़बरी सुनाएं कि उनके लिए उनके रबकी बारगाह में बुलंद पाया (या'नी ऊंचा मर्तबा) है, काफ़िर केहने लगे : बेशक येह शख़्स तो खुला जादूगर है।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ مَا مِن شَفِيعٍ إِلَّا مِنۢ بَعْدِ إِذْنِهِ ۖ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٣﴾

3. यक़ीनन तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आस्मानों और ज़मीन (की बालाई-व-ज़ेरीं काइनात) को छ दिनों (या'नी छ मुद्दतों या मरह़लों) में (तद्रीजन) पैदा फ़रमाया फिर वोह अर्श पर (अपने इक़्तिदार के साथ) जल्वा अफ़रोज़ हुआ (या'नी तख़्लीक़ काइनात के बाद उसके तमाम अ़वालिम और अजराम में अपने क़ानून और निज़ाम के इजरा की सूरत में मु-त-मक्किन हुआ) वोही हर काम की तदबीर फ़रमाता है।(या'नी हर चीज़को एक निज़ामके तहत चलाता है उसके हुज़ूर) उसकी इजाज़त के बिग़ैर कोई सिफ़ारिश करनेवाला नहीं, येही (अ़ज़मतो क़ुदरतवाला)अल्लाह तुम्हारा रब है, सो तुम इसी की इ़बादत करो, पस क्या तुम (क़ुबूले नसीह़त के लिए) ग़ौर नहीं करते ?

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ إِنَّهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ بِالْقِسْطِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٤﴾

4. (लोगो) तुम सब को उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (येह) अल्लाह का सच्चा वा'दा है। बेशक वोही पैदाइश की इब्तिदा करता है फिर वोही उसे दोहराएगा ताकि उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अ़मल किए, इन्साफ़ के साथ जज़ा दे और जिन लोगोंने कुफ़्र किया उनके लिए पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब है, उसका बदला जो वोह कुफ़्र किया करते थे।

هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِیَآءً وَّ الْقَمَرَ نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِیْنَ وَ الْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ یُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ۝۵

5. वोही है जिसने सूरजको रौशनी (का मंबा') बनाया और चांद को (उससे) रौशन (किया) और उसके लिए (कमो बेश दिखाई देने की) मंज़िलें मुक़र्रर कीं ताकि तुम बरसोंका शुमार और (अवक़ात का) हिसाब मा'लूम कर सको, और अल्लाहने येह (सब कुछ) नहीं पैदा फ़रमाया मगर दुरुस्त तदबीर के साथ, वोह (उन काइनाती हक़ीक़तों के ज़रीए अपनी ख़ालिक़िय्यत, वहूदानिय्यत और क़ुदरत की) निशानियां उन लोगों के लिए तफ़्सील से वाज़ेह फ़रमाता है जो इल्म रखते हैं।

اِنَّ فِی اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَّقُوْنَ ۝۶

6.बेशक रात और दिन के बदलते रेहनेमें और उन (जुम्ला) चीज़ोंमें जो अल्लाहने आस्मानों और ज़मीनमें पैदा फ़रमाई हैं (इसी तरह) उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो तक़्वा रखते हैं।

اِنَّ الَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَ رَضُوْا بِالْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَ اطْمَاَنُّوْا بِهَا وَ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ اٰیٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝۷ۙ

7. बेशक जो लोग हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुन्यवी ज़िन्दगी से ख़ुश हैं और उसीसे मुत्मइन हो गए हैं और जो हमारी निशानियोंसे ग़ाफ़िल हैं।

اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ۝۸

8. उन्हीं लोगों का ठिकाना जहन्नम है उन आ'मालके बदले में जो वोह कमाते रहे।

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ یَهْدِیْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِیْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ۝۹

9. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उन्हें उनका रब उनके ईमान के बाइ़स (जन्नतों तक) पहुंचा देगा, जहां उन (की रहाइशगाहों) के नीचे से नेहरें बेह रही होंगी (येह ठिकाने) उख़रवी ने'मत के बागात में (होंगे)।

دَعْوٰىهُمْ فِیْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ تَحِیَّتُهُمْ فِیْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ

10. (ने'मतों और बहारों को देख कर) उन (जन्नतों) में उनकी दुआ़ (येह) होगी ''ऐ अल्लाह ! तू पाक है '' और उसमें उनकी आपसमें दुआ़ए ख़ैर (का कलिमा) ''सलाम'' होगा (या अल्लाह तआ़ला और फ़रिश्तों की

ع

اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠

तरफ़से उनके लिए कलिमऐ इस्तिक़्बाल ''सलाम'' होगा।) और उनकी दुआ़ (उनके कलिमात पर) ख़त्म होगी कि ''तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सब जहानों का परवरदिगार है''।

وَ لَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١

11.और अगर अल्लाह (उन काफ़िर) लोगों को बुराई (या'नी अ़ज़ाब) पहुंचाने में जल्दबाज़ी करता, जैसे वोह तलबे ने'मत में जल्दबाज़ी करते हैं तो यक़ीनन उनकी मीआ़दे (उम्र) उनके हक़ में (जल्द) पूरी कर दी गई होती (ताकि वोह मर के जल्द दोज़ख़ में पहुंचें), बल्कि हम ऐसे लोगों को जो हमसे मुलाक़ात की तवक़्क़ो' नहीं रखते उनकी सरकशीमें छोड़े रखते हैं कि वोह भटकते रहें।

وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآىِٕمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٢

12. और जब (ऐसे) इन्सानको कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो वोह हमें अपने पहलू पर लेटे या बैठे या खड़े पुकारता है फिर जब हम उससे उसकी तक्लीफ़ दूर कर देते हैं तो वोह (हमें भुला कर इस तरह़) चल देता है गोया उसने किसी तक्लीफ़ में जो उसे पहुंची थी हमें (कभी) पुकारा ही नहीं था। इसी तरह़ ह़दसे बढ़नेवालों के लिए उनके (ग़लत) आ'माल आरास्ता करके दिखाए गए हैं जो वोह करते रहे थे।

وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَ مَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣

13. और बेशक हमने तुमसे पहले (भी बहुत सी) क़ौमों को हलाक कर दिया जब उन्होंने जु़ल्म किया, और उनके रसूल उनके पास वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए मगर वोह ईमान लाते ही न थे, इसी तरह़ हम मुजरिम क़ौम को (उनके अ़मल की) सज़ा देते हैं।

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾

14. फिर हमने उनके बाद तुम्हें ज़मीन में (उनका) जानशीन बनाया ताकि हम देखें कि (अब) तुम कैसे अ़मल करते हो।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾

15. और जब उन पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की जाती हैं तो वोह लोग जो हमसे मुलाक़ात की तवक़्क़ो' नहीं रखते, केहते हैं कि इस (क़ुरआन) के सिवा कोई और क़ुरआन ले आइए या इसे बदल दीजिऐ, (ऐ नबिय्ये मुकर्रम !) फ़रमा दें : मुझे ह़क़ नहीं कि मैं उसे अपनी तरफ़से बदल दूं मैं तो फ़क़त जो मेरी तरफ़ वह़ी की जाती है (उसकी) पैरवी करता हूं, अगर मैं अपने रबकी नाफ़रमानी करूं तो बेशक मैं बड़े दिनके अ़ज़ाब से डरता हूं।

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَ لَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾

16. फ़रमा दीजिए : अगर अल्लाह चाहता तो न ही मैं इस (क़ुरआन)को तुम्हारे ऊपर तिलावत करता और न वोह (ख़ुद) तुम्हें इससे बा ख़बर फ़रमाता, बेशक मैं इस (क़ुरआन के उतरने) से क़ब्ल (भी) तुम्हारे अंदर उ़म्र (का एक ह़िस्सा) बसर कर चुका हूं, सो क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾

17. पस उस शख़्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधे या उसकी आयतों को झुटला दे। बेशक मुजरिम लोग फ़लाह नहीं पाएंगे।

وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَ لَا يَنْفَعُهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

18. और (मुशरिकीन) अल्लाह के सिवा उन(बुतों)को पूजते हैं जो न उन्हें नुक़्सान पहुंचा सक्ते हैं और न उन्हें नफ़ा' पहुंचा सक्ते हैं और (अपनी बातिल पूजा के जवाज़में) केहते हैं कि येह (बुत) अल्लाहके ह़ुज़ूर हमारे सिफ़ारिशी हैं, फ़रमा दीजिए : क्या तुम अल्लाहको उस

أَتُنَبِّـُٔونَ ٱللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى
ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ
وَتَعَٰلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

(शफ़ाअ़ते अस्नाम के मन घड़त) मफ़रूज़े से आगाह कर रहे हो जिस (के वजूद) को वोह न आस्मानों में जानता है और न ज़मीन में (या'नी उसकी बारगाह में किसी बुतका सिफ़ारिश करना उसके इ़ल्म में नहीं है)। उसकी ज़ात पाक है और वोह उन सब चीज़ों से बुलंदो बाला है जिन्हें येह (उसका) शरीक गरदान्ते हैं।

وَمَا كَانَ ٱلنَّاسُ إِلَّآ أُمَّةً وَٰحِدَةً
فَٱخْتَلَفُوا۟ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِن رَّبِّكَ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

19- और सारे लोग (इब्तिदा) में एक ही जमाअ़त थे फिर (बाहम इख़्तिलाफ़ कर के) जुदा, जुदा हो गए, और अगर आपके रबकी तरफ़से एक बात पहले से तय न हो चुकी होती (कि अ़ज़ाब में जल्दबाज़ी नहीं होगी) तो उनके दरमियान उन बातों के बारे में फ़ैसला किया जा चुका होता जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं।

وَيَقُولُونَ لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ ءَايَةٌ
مِّن رَّبِّهِۦ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا ٱلْغَيْبُ لِلَّهِ
فَٱنتَظِرُوٓا۟ ۖ إِنِّى مَعَكُم مِّنَ
ٱلْمُنتَظِرِينَ ﴿٢٠﴾ ع

20. और वोह (अब उसी मोहलत की वजहसे) केहते हैं कि इस (रसूल ﷺ) पर उनके रबकी तरफ़से कोई (फ़ैसला कुन) निशानी क्यों नाज़िल नहीं की गई, आप फ़रमा दीजिए : ग़ैब तो मह़ज़ अल्लाह ही के लिए है, सो तुम इन्तिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करनेवालों में से हूं।

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً مِّنۢ
بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِىٓ
ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ
رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

21. और जब हम लोगोंको तक्लीफ़ पहुंचने के बाद (अपनी) रह़्मतसे लिज़्ज़त आशना करते हैं तो फ़ौरन (हमारे एह़सान को भूल कर) हमारी निशानियोंमें उनका मक्रो फ़रेब (शुरूअ़) हो जाता है। फ़रमा दीजिए : अल्लाह मक्र की सज़ा जल्द देनेवाला है। बेशक हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते, जो भी फ़रेब तुम कर रहे हो (उसे) लिखते रेहते हैं।

هُوَ ٱلَّذِى يُسَيِّرُكُمْ فِى ٱلْبَرِّ وَ
ٱلْبَحْرِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا كُنتُمْ فِى ٱلْفُلْكِ ۚ

22. वोही है जो तुम्हें ख़ुश्क ज़मीन और समन्दर में चलने फिरने (की तौफ़ीक़) देता है, यहां तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और वोह (कश्तियां) लोगों

وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾

को ले कर मुवाफ़िक़ हवाके झोंकों से चलती हैं और वोह उससे ख़ुश होते हैं तो (नागहां) उन (कश्तियों) को तेज़ो तुंद हवा का झोंका आ लेता है और हर तरफ़से उन (सवारों) को (जोश मारती हुई) मौजें आ घेरती हैं और वोह समझने लगते हैं कि (अब) वोह उन (लेहरों) से घिर गए (तो उस वक़्त) वोह अल्लाह को पुकारते हैं (इस ह़ालमें) कि अपने दीन को उसी के लिए ख़ालिस करनेवाले हैं (और केहते हैं : ऐ अल्लाह !) अगर तूने हमें इस (बला) से नजात बख़्श दी तो हम ज़रूर (तेरे) शुक्रगुज़ार बंदोंमें से हो जाएंगे।

فَلَمَّآ اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. फिर जब अल्लाहने उन्हें नजात दे दी तो वोह फ़ौरन ही मुल्कमें (ह़स्बे साबिक) नाह़क़ सरकशी करने लगते हैं। ऐ (अल्लाह से बग़ावत करनेवाले) लोगो ! बस तुम्हारी सरकशी-व-बग़ावत (का नुक़्सान) तुम्हारी ही जानों पर है। दुनियाकी ज़िन्दगी का कुछ फ़ाइदह (उठा लो), बिल आख़िर तुम्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है, उस वक़्त हम तुम्हें उन आ'माल से ख़ूब आगाह कर देंगे जो तुम करते रहे थे।

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ۗ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا

24. बस दुनियाकी ज़िन्दगी की मिसाल तो उस पानी जैसी है जिसे हमने आस्मानसे उतारा फिर उसकी वजहसे ज़मीनकी पैदावार ख़ूब घनी हो कर उगी, जिसमें से इन्सान भी खाते हैं और चौपाए भी, यहां तककि जब ज़मीनने अपनी (पूरी पूरी) रौनक़ और हुस्न ले लिया और ख़ूब आरास्ता हो गई और उसके बाशिन्दों ने समझ लिया कि (अब) हम उस पर पूरी क़ुदरत रखते हैं तो (दफ़्अ़तन) उसे रात या दिनमें हमारा हुक्मे (अ़ज़ाब) आ पहुंचा तो हमने उसे (यूं) जड़से कटा हुआ बना दिया गोया वोह

حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾

कल यहां थी ही नहीं, इसी तरह हम उन लोगों के लिए निशानियां खोल कर बयान करते हैं जो तफ़क्कुर से काम लेते हैं।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25. और अल्लाह सलामती के घर (जन्नत) की तरफ़ बुलाता है और जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ़ हिदायत फ़रमाता है।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ ؕ وَ لَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّ لَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. ऐसे लोगों के लिए जो नेक काम करते हैं नेक जज़ा है बल्कि (उस पर) इज़ाफ़ा भी है, और न उनके चेहरों पर (ग़ुबार और) सियाही छाएगी और न ज़िल्लतो रुस्वाई, येही अह्ले जन्नत हैं। वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

وَ الَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ وَ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. और जिन्होंने बुराइयां कमा रखी हैं (उनके लिए) बुराई का बदला उसी की मिस्ल होगा, और उन पर ज़िल्लतो रुस्वाई छा जाएगी उनके लिए अल्लाह (के अ़ज़ाब) से कोई भी बचानेवाला नहीं होगा (यूं लगेगा) गोया उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ोंसे ढांप दिए गए हैं। येही अह्ले जहन्नम हैं वोह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं।

وَ يَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ اَنْتُمْ وَ شُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَ قَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا

28. और जिस दिन हम उन सबको जमा' करेंगे फिर हम मुशरिकों से कहेंगे : तुम और तुम्हारे शरीक (बुताने बातिल) अपनी अपनी जगह ठेहरो । फिर हम उनके दरमियान फूट डाल देंगे । और उनके (अपने गढ़े हुए) शरीक (उनसे) कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो

تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٨﴾

नहीं करते थे।

فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ
اِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. पस हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही गवाह काफ़ी है कि हम तुम्हारी परस्तिश से (यक़ीनन) बेख़बर थे।

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ
اَسْلَفَتْ وَ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ
الْحَقِّ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿٣٠﴾ النصف

30. उस (देहशतनाक) मुक़ाम पर हर शख़्स उन (आ'माल की हक़ीक़त) को जांच लेगा जो उसने आगे भेजे थे और वोह अल्लाह की जानिब लौटाए जाएंगे जो उनका मालिके ह़क़ीक़ी है और उनसे वोह बोह्तान तराशी जाती रहेगी जो वोह किया करते थे।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ
وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
وَ مَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ
اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٣١﴾

31. आप (उनसे) फ़रमा दीजिए : तुम्हें आस्मान और ज़मीन (या'नी ऊपर और नीचे) से रिज़्क़ कौन देता है, या (तुम्हारे) कान और आँखों (या'नी समाअ़तो बसारत)का मालिक कौन है, और ज़िन्दह को मुर्दह (या'नी जानदार को बेजान) से कौन निकालता है, और मुर्दह को ज़िन्दा (या'नी बेजान को जानदार) से कौन निकालता है और (निज़ामहाए काइनात की) तदबीर कौन फ़रमाता है? सो वोह केह उठेंगे कि अल्लाह, तो आप फ़रमाइए : फिर क्या तुम (उससे) डरते नहीं?

فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا
بَعْدَ الْحَقِّ اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى
تُصْرَفُوْنَ ﴿٣٢﴾

32. पस येही (अ़ज़मतो क़ुदरतवाला) अल्लाह ही तो तुम्हारा सच्चा रब है, पस (उस) ह़क़के बाद सिवाए गुमराही के और क्या हो सक्ता है, सो तुम कहां फिरे जा रहे हो ?

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى
الَّذِيْنَ فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. इसी तरह़ आपके रबका हुक्म ना फ़रमानों पर साबित हो कर रहा कि वोह ईमान नहीं लाएंगे।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ

34. आप (उनसे दर्याफ़्त) फ़रमाइए कि क्या तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में से कोई ऐसा है जो तख़्लीक़ की इब्तिदा करे फिर (ज़िन्दगी के मा'दूम हो जाने के बाद)

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

उसे दोबारह लौटाए, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह ही (ह़यात को अ़दम से वजूदमें लाते हुए) आफ़रीनश का आग़ाज़ फ़रमाता है फिर वोही उस का इआ़दा (भी) फ़रमाएगा , फिर तुम कहां भटकते फिरते हो ?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. आप (उनसे दर्याफ़्त)फ़रमाइए : क्या तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में से कोई ऐसा है जो ह़क़ की तरफ़ रहनुमाई कर सके, आप फ़रमा दीजिए कि अल्लाह ही (दीने) ह़क़ की हिदायत फ़रमाता है, तो क्या जो कोई ह़क़ की तरफ़ हिदायत करे वोह ज़ियादह ह़क़्क़दार है कि उसकी फ़रमांबर्दारी की जाए या वोह जो ख़ुद ही रास्ता नहीं पाता मगर येह कि उसे रास्ता दिखाया जाए (या'नी उसे उठा कर एक जगहसे दूसरी जगह पहुंचाया जाए जिसे कुफ़्फ़ार अपने बुतों को ह़स्बे ज़रूरत उठा कर ले जाते) सो तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो?

وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. उनमें से अक्सर लोग सिर्फ़ गुमानकी पैरवी करते हैं, बेशक गुमान ह़क़ से मा'मूली सा भी बे नियाज़ नहीं कर सक्ता, यक़ीनन अल्लाह ख़ूब जानता है, जो कुछ वोह करते हैं।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. येह कुरआन ऐसा नहीं है कि इसे अल्लाह (की वह़ी) के बिग़ैर गढ़े लिया गया हो लेकिन (येह) उन (किताबों) की तस्दीक़ (करनेवाला) है जो इससे पहले (नाज़िल हो चुकी) हैं और जो कुछ (अल्लाहने लौह़ में या अह़्कामे शरीअ़त में) लिखा है उसकी तफ़्सील है, इस (की ह़क़्क़ानियत) में ज़रा भी शक नहीं (येह) तमाम जहानों के रबकी तरफ़ से है।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا

38. क्या वोह केहते हैं कि उसे रसूलने ख़ुद गढ़ लिया है,

بِسُوۡرَةٍ مِّثۡلِهٖ وَ ادۡعُوۡا مَنِ
اسۡتَطَعۡتُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتُمۡ
صٰدِقِيۡنَ ﴿۳۸﴾

आप फ़रमा दीजिए : फिर तुम उसकी मिसाल कोई (एक) सूरत ले आओ, और (अपनी मदद के लिए) अल्लाहके सिवा जिन्हें तुम बुला सक्ते हो बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।

بَلۡ كَذَّبُوۡا بِمَا لَمۡ يُحِيۡطُوۡا بِعِلۡمِهٖ
وَلَمَّا يَاۡتِهِمۡ تَاۡوِيۡلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ
الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۳۹﴾

39. बल्कि येह उस (कलामे इलाही) को झुटला रहे हैं जिसके इल्म का वोह अहाता भी नहीं कर सके थे और अभी उसकी हक़ीक़त (भी) उनके सामने खुल कर न आई थी। इसी तरह उन लोगोंने भी (हक़ को) झुटलाया था जो उनसे पहले हो गुज़रे हैं सो आप देखें कि ज़ालिमों का अंजाम कैसा हुआ।

وَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ يُّؤۡمِنُ بِهٖ وَ مِنۡهُمۡ
مَّنۡ لَّا يُؤۡمِنُ بِهٖ ؕ وَ رَبُّكَ
اَعۡلَمُ بِالۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۴۰﴾ ع

40. उनमें से कोई तो उस पर ईमान लाएगा और उन्हीं में से कोई उस पर ईमान न लाएगा, और आपका रब फ़साद अंगेज़ी करनेवालों को खूब जानता है।

وَ اِنۡ كَذَّبُوۡكَ فَقُلۡ لِّىۡ عَمَلِىۡ وَ
لَكُمۡ عَمَلُكُمۡ ۚ اَنۡتُمۡ بَرِيۡٓـــُٔوۡنَ مِمَّاۤ
اَعۡمَلُ وَاَنَا بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۴۱﴾

41. और अगर वोह आपको झुटलाएं तो फ़रमा दीजिए कि मेरा अ़मल मेरे लिए है और तुम्हारा अ़मल तुम्हारे लिए, तुम उस (अ़मल) से बरीउज़-ज़िम्मा हो जो मैं करता हूं और मैं उन (आ'माल) से बरीउज़-ज़िम्मा हूं जो तुम करते हो।

وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّسۡتَمِعُوۡنَ اِلَيۡكَ ؕ
اَفَاَنۡتَ تُسۡمِعُ الصُّمَّ وَ لَوۡ كَانُوۡا
لَا يَعۡقِلُوۡنَ ﴿۴۲﴾

42. और उनमें से बा'ज़ वोह हैं जो (ज़ाहिरन) आप की तरफ़ कान लगाते हैं तो क्या आप बेहरों को सुना देंगे ख़्वाह वोह कुछ अ़क्ल भी न रखते हों।

وَ مِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّنۡظُرُ اِلَيۡكَ ؕ اَفَاَنۡتَ
تَهۡدِى الۡعُمۡىَ وَ لَوۡ كَانُوۡا
لَا يُبۡصِرُوۡنَ ﴿۴۳﴾

43. उनमें से बा'ज़ वोह हैं जो (ज़ाहिरन) आपकी तरफ़ देखते है, क्या आप अंधों को राह दिखा देंगे ख़्वाह वोह कुछ बसारत भी न रखते हों।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظۡلِمُ النَّاسَ شَيۡـــًٔا وَّلٰكِنَّ

44. बेशक अल्लाह लोगों पर ज़र्रह बराबर ज़ुल्म नहीं

النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

करता लेकिन लोग (खुद ही) अपनी जानों पर जुल्म करते हैं।

وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾

45. और जिस दिन उन्हें जमा' करेगा (वोह महसूस करेंगे) गोया वोह दिनकी एक घड़ी के सिवा दुनिया में ठेहरे ही न थे, वोह एक दूसरेको पहचानेंगे। बेशक वोह लोग ख़सारे में रहे जिन्होंने अल्लाहसे मुलाक़ात को झुटलाया था और वोह हिदायत याफ़्ता न हुए।

وَ اِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. और ख़्वाह हम आपको उस (अ़ज़ाब) का कुछ हिस्सा (दुनिया में ही) दिखा दें जिसका हम उनसे वा'दा कर रहे हैं (और हम आपकी हयाते मुबारका में ऐसा करेंगे) या (उससे पहले) हम आपको वफ़ात बख़्श दें, तो उन्हें (बहर सूरत) हमारी ही तरफ़ लौटना है, फिर अल्लाह (खुद) उस पर गवाह है जो कुछ वोह कर रहे हैं।

وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. और हर उम्मत के लिए एक रसूल आता रहा है। फिर जब उनका रसूल (वाज़ेह़ निशानियों के साथ)आ चुका (और वोह फिर भी न माने) तो उनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और (क़ियामत के दिन भी इसी तरह होगा) उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾

48. और वोह (ता'ना ज़नी के तौर पर) केहते हैं कि येह वा'दए (अ़ज़ाब) कब (पूरा) होगा (मुसलमानो ! बताओ) अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. फ़रमा दीजिए : मैं अपनी ज़ात के लिए न किसी नुक़्सान का मालिक हूं और न नफ़े' का, मगर जिस क़दर अल्लाह चाहे। हर उम्मत के लिए एक मीआ़द (मुक़र्रर) है, जब उनकी (मुक़र्ररह) मीआ़द आ पहुंचती है तो वोह न एक घड़ी पीछे हट सक्ते हैं और न आगे बढ़ सक्ते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ
بَيَاتًا اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ
مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. आप फ़रमा दीजिए : (ऐ काफ़िरो !) ज़रा ग़ौर तो करो अगर तुम पर उसका अ़ज़ाब (नागहां) रातों रात या दिन दहाड़े आ पहुंचे (तो तुम क्या कर लोगे) वोह क्या चीज़ है कि मुजरिम लोग उससे जल्दी चाहते हैं।

اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْئٰنَ
وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٥١﴾

51. क्या जिस वक़्त वोह (अ़ज़ाब) वाक़े' हो जाएगा तो तुम उस पर ईमान ले आओगे (उस वक़्त तुम से कहा जाएगा) अब (ईमान ला रहे हो, इस वक़्त कोई फ़ाइदा नहीं) हालांकि तुम (इस्तेह्ज़ाअन) इसी (अ़ज़ाब) में जल्दी चाहते थे।

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا
عَذَابَ الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا
بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. फिर (उन) ज़ालिमों से कहा जाएगा : तुम दाइमी अ़ज़ाब का मज़ा चखो, तुम्हें (कुछ भी और) बदला नहीं दिया जाएगा मगर उन्ही आ'माल का जो तुम कमाते रहे थे।

وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ
وَرَبِّيْۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ ۚؕ وَمَاۤ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥٣﴾

53. और वोह आपसे दर्याफ़्त करते हैं कि क्या (दाइमी अ़ज़ाब की) वोह बात (वाक़ई) सच है ? फ़रमा दीजिए : हां मेरे रब की क़सम यक़ीनन वोह बिल्कुल हक़ है। और तुम (अपने इन्कार से अल्लाहको) आ़जिज़ नहीं कर सक्ते।

وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي
الْاَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا
النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ
وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. अगर हर ज़ालिम शख़्सकी मिल्कियत में वोह (सारी दौलत) हो जो ज़मीनमें है तो वोह यक़ीनन उसे (अपनी जान छुड़ाने के लिए) अ़ज़ाब के बदले में दे डाले (तो फिर भी अ़ज़ाब से न बच सकेगा), और (ऐसे लोग) जब अ़ज़ाब को देखेंगे तो अपनी नदामत छुपाए फिरेंगे और उनके दरमियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं होगा।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٥﴾

55. जान लो ! जो कुछ भी आस्मानों और ज़मीन में है (सब) अल्लाह ही का है। ख़बरदार हो जाओ ! बेशक अल्लाहका वा'दा सच्चा है लेकिन उनमेंसे अक्सर लोग नहीं जानते।

هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ وَ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٦﴾

56. वोही जिलाता और मारता है और तुम उसीकी तरफ़ पलटाए जाओगे।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوْرِ ۙ۬
وَ هُدًی وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

57. ऐ लोगो! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रबकी तरफ़से नसीहत और उन (बीमारियों) की शिफ़ा आ गई है जो सीनोंमें (पोशीदह) हैं और हिदायत और अह्ले ईमान के लिए रह्मत (भी)।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ
فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُوْنَ ﴿٥٨﴾

58. फ़रमा दीजिऐ : (येह सब कुछ) अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रह्मत के बाइस है (जो बे'सते मुहम्मदी ﷺ के ज़रीए़ तुम पर हुवा है) पस मुसलमानों को चाहिए कि उस पर ख़ुशियां मनाएं, येह उस (सारे मालो दौलत) से कहीं बेहतर है जिसे वोह जमा' करते हैं।

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ
مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّ
حَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى
اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. फ़रमा दीजिए : ज़रा बताओ तो सही अल्लाहने जो (पाकीज़ा) रिज़्क़ तुम्हारे लिए उतारा सो तुमने उसमें से बा'ज़ (चीज़ों) को ह़राम और (बा'ज़ को) ह़लाल क़रार दे दिया। फ़रमा दें : क्या अल्लाहने तुम्हें (इस की) इजाज़त दी थी या तुम अल्लाह पर बोहतान बांध रहे हो?

وَ مَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى
اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع

60. और ऐसे लोगों का रोज़े क़ियामत के बारेमें क्या ख़याल है जो अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं, बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ज़्ल फ़रमानेवाला है लेकिन उन में से अक्सर (लोग) शुक्र गुज़ार नहीं हैं।

وَ مَا تَكُوْنُ فِیْ شَاْنٍ وَّ مَا تَتْلُوْا مِنْهُ
مِنْ قُرْاٰنٍ وَّ لَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ
اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ

61. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप जिस ह़ालमें भी हों और आप उसकी तरफ़से जिस क़दर भी क़ुरआन पढ़ कर सुनाते हैं और (ऐ उम्मते मुह़म्मदिया!) तुम जो अ़मल भी करते हो मगर हम (उस वक़्त) तुम सब पर गवाहो निगेहबान होते हैं जब तुम उसमें मशग़ूल होते हो और

فِيْهِ ؕ وَ مَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ
مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا فِي
السَّمَآءِ وَ لَاۤ اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَ
لَاۤ اَكْبَرَ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٦١﴾

आपके रब (के इ़ल्म) से एक ज़र्रह बराबर भी (कोई चीज़) न ज़मीनमें पोशीदा है और न आस्मानमें और न उस (ज़र्रे) से कोई छोटी चीज़ है और न बड़ी मगर वाज़ेह किताब (या'नी लौहे़ महफ़ूज़) में (दर्ज) है।

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. ख़बरदार ! बेशक औलिया अल्लाह पर न कोई ख़ौफ़ है और न वोह रंजीदह-व-ग़मगीन होंगे।

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. (वोह) ऐसे लोग हैं जो ईमान लाए और (हमेशा) तक्वा शिआ़र रहे।

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي
الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾

64. उनके लिए दुनियाकी ज़िन्दगीमें (भी इ़ज़्ज़तो मक़्बूलियत की) बिशारत है और आख़िरतमें (भी मग़फ़िरतो शफ़ाअ़त की/या दुनिया में भी नेक ख़्वाबों की सूरत में पाकीज़ा रूहानी मुशाहिदात हैं और आख़िरत में भी हुस्ने मुत्लक़ के जल्वे और दीदार), अल्लाह के फ़रमान बदला नहीं करते, येही वोह अ़ज़ीम कामयाबी है।

وَ لَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ
لِلّٰهِ جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾

وقف لازم

65. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) उनकी (इ़नादो अ़दावत पर मब्नी) गुफ़्तुगू आपको ग़मगीन न करे । बेशक सारी इ़ज़्ज़तो ग़लबा अल्लाह ही के लिए है (जो जिसे चाहता है देता है), वोह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ
فِي الْاَرْضِ ؕ وَ مَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ
يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ؕ
اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ اِنْ هُمْ

66. जान लो ! जो कोई आस्मानों में है और जो कोई ज़मीनमें है सब अल्लाह ही के (मम्लूक) हैं, और जो लोग अल्लाहके सिवा (बुतों) की परस्तिश करते हैं (दर ह़क़ीक़त अपने घड़े हुए) शरीकों की पैरवी (भी) नहीं करते बल्कि वोह सिर्फ़ (अपने) वह्मो गुमान की पैरवी

करते हैं और वोह महज़ ग़लत अंदाज़े लगाते रेहते हैं।

اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾

67. वोही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन को रौशन बनाया (ताकि तुम उसमें कामकाज कर सको)। बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो (ग़ौरसे) सुनते हैं।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾

68. वोह केहते हैं : अल्लाहने (अपने लिए) बेटा बना लिया है (हालांकि) वोह इससे पाक है, वोह बे नियाज़ है। जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीनमें है सब उसीकी मिल्क है, तुम्हारे पास इस (क़ौले बातिल) की कोई दलील नहीं, क्या तुम अल्लाह पर वोह (बात) केहते हो जिसे तुम (ख़ुद भी) नहीं जानते।

قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

69. फ़रमा दीजिए : बेशक जो लोग अल्लाह पर झूटा बोहतान बांधते हैं वोह फ़लाह नहीं पाएंगे।

قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾ ؕ

70. दुनियामें (चंद रोज़ह) लुत्फ़ अंदोज़ी है फिर उन्हें हमारी ही तरफ़ पलटना है फिर हम उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे उसके बदले में जो वोह कुफ़्र किया करते थे।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع ١٠ ١٢

71. और उन पर नूह (عليه السلام) का क़िस्सा बयान फ़रमाइए। जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा : ऐ मेरी क़ौम (औलादे क़ाबील !) अगर तुम पर मेरा क़ियाम और मेरा अल्लाहकी आयतों के साथ नसीहत करना गिरां गुज़र रहा है तो (जान लो कि) मैं ने तो सिर्फ़अल्लाह ही पर तवक्कल कर लिया है (और तुम्हारा कोई डर नहीं) सो सुम इकठ्ठे हो कर (मेरी मुख़ालिफ़त में) अपनी तदबीर को पुख़्ता कर लो और अपने (गठे हए) शरीकों को भी (साथ मिला लो और इस क़दर सोच लो कि) फिर तुम्हारी तदबीर (का कोई पहलू)

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ

وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾

तुम पर मुख़्फ़ी न रहे, फिर मेरे साथ (जो जी में आए) कर गुज़रो और (मुझे) कोई मोहलत न दो।

فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. सो अगर तुमने (मेरी नसीह़त से) मुंह फेर लिया है तो मैं ने तुम से कोई मुआ़वज़ा तो नहीं मांगा। मेरा अज्र तो सिर्फ़अल्लाह (के ज़िम्मए करम) पर है और मुझे येह हुक्म दिया गया है कि मैं (उसके हुक्मके सामने) सर तस्लीमे ख़म किए रखूं।

فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَ مَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. फिर आपकी क़ौमने आपको झुटलाया पस हमने उन्हें और जो उनके साथ कश्ती में थे (अ़ज़ाबे तूफ़ानसे) नजात दी और हमने उन्हें (ज़मीनमें) जा नशीन बना दिया और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी आयतोंको झुटलाया था, सो आप देखिए कि उन लोगोंका अंजाम कैसा हुवा जो डराए गए थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٧٤﴾

74. फिर हमने उनके बाद (कितने ही) रसूलों को उनकी क़ौमों की तरफ़ भेजा सो वोह उनके पास वाज़ेह़ निशानियां ले कर आए पस वोह लोग (भी) ऐसे न हुए कि इस (बात) पर ईमान ले आते जिसे वोह पहले झुटला चुके थे। उसी तरह हम सरकशी करनेवालों के दिलों पर मोहर लगा दिया करते हैं।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

75. फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून (عليهما السلام) को फिरऔ़न और उसके सरदाराने क़ौमकी तरफ़ निशानियों के साथ भेजा तो उन्होंने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम लोग थे।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٦﴾

76. फिर जब उनके पास हमारी तरफ़ से ह़क़ आया (तो) केहने लगे : बेशक येह तो खुला जादू है।

قَالَ مُوْسٰٓى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا

77. मूसा (عليه السلام) ने कहा : क्या तुम (ऐसी बात) ह़क़ से

جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ﴿۷۷﴾

मुतअ़ल्लिक़ केहते हो जब वोह तुम्हारे पास आ चुका है, (अ़क़्लो शऊ़र की आँखें खोल कर देखो) क्या येह जादू है ? और जादूगर (कभी) फ़लाह़ नहीं पा सकेंगे।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَ تَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۷۸﴾

78. वोह केहने लगे : (ऐ मूसा !) क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि तुम हमें उस (तरीक़े) से फेर दो जिस पर हमने अपने बापदादा को (गामज़न) पाया और ज़मीन (या'नी सरज़मीने मिस्र) में तुम दोनों की बड़ाई (क़ाइम) रहे, और हम लोग तुम दोनों को माननेवाले नहीं है।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۷۹﴾

79. और फ़िरऔ़न केहने लगा : मेरे पास हर माहिर जादूगरको ले आओ।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿۸۰﴾

80. फिर जब जादूगर आ गए तो मूसा (عليه السلام) ने उन से कहा : तुम (वोह चीज़ें मैदानमें) डाल दो जो तुम डालना चाहते हो।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۸۱﴾

81. फिर जब उन्होंने (अपनी रस्सियां और लाठियां) डाल दीं तो मूसा (عليه السلام) ने कहा : जो कुछ तुम लाए हो (येह) जादू है। बेशक अल्लाह अभी इसे बातिल कर देगा। यक़ीनन अल्लाह मुफ़्सिदों के काम को दुरुस्त नहीं करता।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸۲﴾ ع ۸ ۱۲ ۱۳

82. और अल्लाह अपने कलिमात से ह़क़ का ह़क़ होना साबित फ़रमा देता है अगरचे मुजरिम लोग उसे ना पसंद ही करते रहें।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰٓى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهِمْ اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَ اِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى الْاَرْضِ ۚ وَ اِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۸۳﴾

83. पस मूसा (عليه السلام) पर उनकी क़ौमके चंद जवानों के सिवा (कोई) ईमान न लाया, फिरऔ़न और अपने (क़ौमी) सरदारों (वडेरों) से डरते हुए कि कहीं वोह उन्हें (किसी) मुसीबत में मुब्तिला न कर दें, और बेशक फिरऔ़न सर ज़मीने (मिस्र) में बड़ा जाबिरो सरकश था और वोह यक़ीनन (जुल्म में) ह़दसे बढ़ जानेवालों में से था।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ﴿٨٤﴾

84. और मूसा (عليه السلام) ने कहा : ऐ मेरी क़ौम ! अगर तुम अल्लाह पर ईमान लाए हो तो उसी पर तवक्कल करो, अगर तुम (वाक़ई) मुसलमान हो।

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿٨٥﴾

85. तो उन्होंने अ़र्ज़ किया : हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया है, ऐ हमारे रब ! तू हमें ज़ालिम लोगों के लिए निशानए सितम न बना।

وَ نَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. और तू हमें अपनी रह़मत से काफ़िरोंकी क़ौम (के तसल्लुत) से नजात बख़्श दे।

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَ اَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّ اجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. और हमने मूसा (عليه السلام)और उनके भाई की तरफ़ वह़ी भेजी कि तुम दोनों मिस्र (के शहर) में अपनी क़ौमके लिए चंद मकानात तैयार करो और अपने (उन) घरों को (नमाज़की अदाएगी के लिए) क़िब्ला रुख़ बनाओ और (फिर) नमाज़ क़ाइम करो, और ईमानवालों को (फ़त्हो नुसरत की) ख़ुश ख़बरी सुना दो।

وَ قَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّ اَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَ اشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٨٨﴾

88. और मूसा (عليه السلام)ने कहा : ऐ हमारे रब! बेशक तू ने फ़िरऔ़न और उसके सरदारों को दुन्यवी जिन्दगी में अस्बाबे ज़ीनत और मालो दौलत (की कसरत) दे रखी है, ऐ हमारे रब ! (क्या तू ने उन्हें येह सब कुछ इस लिए दिया है) ताकि वोह (लोगों को कभी लालच और कभी ख़ौफ़ दिला कर) तेरी राहसे बेहका दें। ऐ हमारे रब ! तू उनकी दौलतों को बरबाद कर दे और उनके दिलों को (इतना) सख़्त कर दे कि वोह फिर भी ईमान न लाएं ह़त्ता कि वोह दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।

قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَ لَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ

89. इर्शाद हुआ : बेशक तुम दोनों की दुआ क़बूल कर ली गई, सो तुम दोनों साबित क़दम रेहना और ऐसे लोगों

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

के रास्तेकी पैरवी न करना जो इल्म नहीं रखते।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ
فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّ
عَدْوًا ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ
قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ
اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا
مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

90. और हम बनी इसराईल को दरया के पार ले गए पस फ़िरऔन और उसका लश्करने सरकशी और ज़ुल्मो तअद्दीसे उनका तआ़कुब किया, यहां तक कि जब उसे (या'नी फ़िरऔन को) डूबने ने आ लिया वोह केहने लगा : मैं इस पर ईमान ले आया कि कोई मा'बूद नहीं सिवाए उस (मा'बूद) के जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए हैं और मैं (अब) मुसलमानों में से हूं।

آٰلْئٰنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ
مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٩١﴾

91. (जवाब दिया गया कि) अब (ईमान लाता है), हालां कि तू पहले (मुसल्सल) ना फ़रमानी करता रहा है और तू फ़साद बपा करनेवालों में से था।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ
لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا
مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ﴿٩٢﴾ ع

92. (ऐ फ़िरऔन !) सो आज हम तेरे (बेजान) जिस्म को बचा लेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए (इब्रत का) निशान हो सके और बेशक अक्सर लोग हमारी निशानियों (को समझने) से ग़ाफ़िल हैं।

وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ
صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا
اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. और फ़िल-वाक़े' हमने बनी इसराईल को रेहने के लिए उ़मदह जगह बख़्शी और हमने उन्हें पाकीज़ा रिज़्क़ अ़ता किया तो उन्होंने कोई इख़्तिलाफ़ न किया यहां तक कि उनके पास इल्मो दानिश आ पहुंची। बेशक आपका रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उन उमूरका फ़ैसला फ़रमा देगा जिनमें वोह इख़्तिलाफ़ करते थे।

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ
اِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ
الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ

94. (ऐ सुननेवाले !) अगर तू इस (किताब) के बारेमें ज़रा भी शक में मुब्तिला है जो हमने (अपने रसूल ﷺ की वसातत से) तेरी तरफ़ उतारी है तो (इसकी हक़्क़ानियत की निस्बत) उन लोगों से दर्याफ़्त कर ले जो

الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿٩٤﴾

तुझ से पहले (अल्लाहकी) किताब पढ़ रहे हैं। बेशक तेरी तरफ़ तेरे रबकी जानिबसे हक़ आ गया है, सो तू शक करनेवालों में से हरगिज़ न हो जाना।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٥﴾

95. और न हरगिज़ उन लोगों में से हो जाना जो अल्लाहकी आयतों को झुटलाते रहे वरना तू ख़सारा पानेवालों में से हो जाएग।

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) बेशक जिन लोगों पर आपके रबका फ़रमान सादिक़ आ चुका है वोह ईमान नहीं लाएंगे।

وَ لَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٩٧﴾

97. अगरचे उनके पास सब निशानियां आ जाएं यहां तककि वोह दर्दनाक अ़ज़ाब (भी) देख लें।

فَلَوْ لَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ؕ لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ مَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٩٨﴾

98. फिर क़ौमे यूनुस (की बस्ती) के सिवा कोई और ऐसी बस्ती क्यों न हुई जो ईमान लाई हो और उसे उसके ईमान लानेने फ़ाइदा दिया हो। जब (क़ौमे यूनुसके लोग नुज़ूले अ़ज़ाब से क़ब्ल सिर्फ़ उसकी निशानी देख कर) ईमान ले आए तो हमने उनसे दुन्यावीं ज़िन्दगी में (ही) रुस्वाई का अ़ज़ाब दूर कर दिया और हमने उन्हें एक मुद्दत तक मुनाफ़े' से बेहरा मंद रखा।

وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ؕ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٩﴾

99. और अगर आपका रब चाहता तो ज़रूर सब के सब लोग जो ज़मीनमें आबाद हैं ईमान ले आते, (जब रबने उन्हें जब्रन मोमिन नहीं बनाया) तो क्या आप लोगों पर जब्र करेंगे यहां तक कि वोह मोमिन हो जाएं।

وَ مَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ يَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100. और किसी शख़्सको (अज़ ख़ुद येह) क़ुदरत नहीं कि वोह बिग़ैर इज़्ने इलाही के ईमान ले आए। वोह (या'नी अल्लाह तआ़ला) कुफ़्र की गंदगी उन्हीं लोगों पर डालता है जो (हक़को समझने के लिए) अ़क़्ल से काम नहीं लेते।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰۱﴾

101. फ़रमा दीजिए : तुम लोग देखो तो (सही) आस्मानों और ज़मीन (की इस वसीअ़ काइनात) में क़ुदरते इलाहिया की क्या क्या निशानियां हैं, और (येह) निशानियां और (अ़ज़ाबे इलाही से) डरानेवाले (पयग़म्बर) ऐसे लोगों को फ़ाइदा नहीं पहुंचा सकते जो ईमान लाना ही नहीं चाहते।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ قُلْ فَانْتَظِرُوْا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾

102. सो क्या येह लोग उन्हीं लोगों (के बुरे दिनों) जैसे दिनोंका इन्तिज़ार कर रहे हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं ? फ़रमा दीजिए कि तुम (भी) इन्तिज़ार करो मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करनेवालों में से हूं।

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ ع ۱۰ ۱۱ ۱۵

103. फिर हम अपने रसूलों को बचा लेते हैं और उन लोगों को भी जो इस तरह़ ईमान ले आते हैं (येह बात) हमारे ज़िम्मए करम पर है कि हम ईमानवालों को बचा लें।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ لا

104. फ़रमा दीजिए : ऐ लोगो ! अगर तुम मेरे दीन (की ह़क़ानियत के बारे) में ज़रा भी शक में हो तो (सुन लो) कि मैं उन (बुतों) की परस्तिश नहीं कर सक्ता जिनकी तुम अल्लाहके सिवा परस्तिश करते हो लेकिन मैं तो उस अल्लाहकी इ़बादत करता हूं जो तुम्हें मौतसे हम कनार करता है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं (हमेशा) अह्ले ईमान में से रहूं।

وَ اَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۰۵﴾

105. और येह कि आप हर बातिल से बच कर (यकसू हो कर) अपना रुख़ दीन पर क़ाइम रखें और हरगिज़ शिर्क करनेवालों में से न हों।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَ لَا يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ

106. (येह हुक्म रसूलुल्लाह ﷺ की वसातत से उम्मत को दिया जा रहा है) और न अल्लाह के सिवा उन (बुतों) की इ़बादत करें जो न तुम्हें नफ़ा' पहुंचा सक्दे हैं और न

اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾

तुम्हें नुक़्सान पहुंचा सकते हैं, फिर अगर तुमने ऐसा किया तो बेशक तुम उस वक़्त ज़ालिमों में से हो जाओगे।

وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا
كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اِنْ يُّرِدْكَ
بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾

107. और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं और अगर वोह तुम्हारे साथ भलाई का इरादा फ़रमाए तो कोई उसके फ़ज़्ल को रद करनेवाला नहीं। वोह अपने बंदों में से जिसे चाहता है अपना फ़ज़्ल पहुंचाता है, और वोह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ
فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَ مَاۤ اَنَا
عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ؕ ﴿١٠٨﴾

108. फ़रमा दीजिए : ऐ लोगो ! बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से हक़ आ गया है, सो जिसने राहे हिदायत इख़्तियार की बस वोह अपने ही फ़ाइदे के लिए हिदायत इख़्तियार करता है और जो गुमराह हो गया बस वोह अपनी ही हलाकत के लिए गुमराह होता है और मैं तुम्हारे ऊपर दारोग़ा नहीं हूं (कि तुम्हें सख़्तीसे राहे हिदायत पर ले आऊं)।

وَ اتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَ اصْبِرْ
حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۚۖ وَ هُوَ خَيْرُ
الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ع

109. (ऐ रसूल !) आप उसीकी इत्तिबाअ़ करें जो आपकी तरफ़ वही की जाती है और सब्र करते रहें यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला फ़रमा दे और वोह सबसे बेहतर फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

आयातुहा 123 | 11 सूरतु हूदिन मक्किय्यतुन 52 | रुकूआ़तुहा 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नामसे शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

الٓرٰ ۟ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ
فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ

१. अलिफ़ लाम रा (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं, येह वोह) किताब है जिसकी आयतें मुस्तहकम बना दी गई हैं, फिर हिक्मतवाले बा

خَبِيْرٍ ۙ﴿۱﴾

ख़बर (रब) की जानिबसे वोह मुफ़स्सल बयान कर दी गई हैं।

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ﴿۲﴾

2. येह कि अल्लाहके सिवा तुम किसी की इबादत मत करो, बेशक मैं तुम्हारे लिए उस (अल्लाह) की जानिब से डर सुनानेवाला और बिशारत देनेवाला हूं।

وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ ﴿۳﴾

3. और येह कि तुम अपने रबसे मग़्फ़िरत तलब करो फिर तुम उसके हुज़ूर (सिद्क़ दिल से) तौबा करो वोह तुम्हें वक़्ते मुअ़य्यन तक अच्छी मताअ़ से लुत्फ़ अंदोज़ रखेगा और हर फ़ज़ीलतवाले को उसकी फ़ज़ीलत की जज़ा देगा (या'नी उसके आ'मालो रियाज़त की कसरत के मुताबिक़ अज्रो दर्जात अ़ता फ़रमाएगा), और अगर तुमने रूगर्दानी की तो मैं तुम पर बड़े दिनके अ़ज़ाब का ख़ौफ़ रखता ह।

اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴﴾

4. तुम्हें अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है और वोह हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है।

اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۵﴾

5. जान लो ! बेशक वोह (कुफ़्फ़ार) अपने सीनों को दोहरा कर लेते हैं ताकि वोह उस (ख़ुदा) से (अपने दिलों का ह़ाल) छुपा सकें, ख़बरदार ! जिस वक्त वोह अपने कपड़े (जिस्मों पर) ओढ़ लेते हैं (तो उस वक़्त भी) वोह उन सब बातों को जानता है जो वोह छुपाते हैं और जो वोह आश्कार करते हैं, बेशक वोह सीनों की (पोशीदह) बातों को ख़ूब जाननेवाला है।